'मास्टर' मणिमालायाः ८१ संख्यको मणिः (तन्त्रवि० २)

महेश्वरप्रोक्तं

माहेश्वरीयतन्त्रम्

टीकाकारः—
पं० श्रीरामेश्वरदत्तशर्मा

प्रकाशकः—
र खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स,
कचौड़ीगली, बनारस-१
मूल्यम् ।-)

131
T-M

'मास्टर' मणिमालायाः ८१ संख्यको मणिः (तन्त्रविभागे २)

ST-98

महेश्वरप्रोक्तं—

माहेश्वरीयतन्त्रम् ।

पं० श्रीरामेश्वरदत्तशर्मकृतया

हिन्दीटीकया विलसितम् ।

तच्च

काशीस्थ-'संस्कृत बुकडिपो'-इत्यस्याऽधिपैः

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स् महोदयैः

स्वीये 'मास्टर प्रिण्टिङ्ग वर्क्स' नाम्नि मुद्रणागारे

मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

अस्याधिकाराः प्रकाशकेन स्वायत्तीकृताः ।

द्वितीयं संस्करणम्] सन् १९५१ ई० [मूल्यम् ।-)

प्रकाशकः—

बी० एन० यादव, प्रोप्राइटर,

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स,

कचौड़ीगली, बनारस–१

मुद्रकः —

श्रीमन्नालाल अभिमन्यु, एम० ए०,

मास्टर प्रिण्टिङ्ग वर्क्स,

बुलानाला, बनारस–१

॥ श्रीः ॥

माहेश्वरीयतन्त्रम्

भाषाटीकासहितम् ।

अथ प्रथमाङ्कः ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः ॥

ध्यात्वा शिवमुमासार्द्धं योगीन्द्रं गुरुमुत्तमम् ।
सुभाषितं शिवगिरितन्त्रं भाषां वितन्यते ॥ १ ॥

हिमालय की नन्दिनी उमा (पार्वती) के सहित शिवजी का ध्यान करके फिर योगियों में श्रेष्ठ श्रीगुरु रूपी भगवान् सच्चिदानन्द को प्रणाम करके शिवगिरिजी से कहे हुए तन्त्र का भाषानुवाद करता हूँ ॥ १ ॥

श्रीमत्र्यम्बकपर्वते शिवगिरिः संन्यासिनामग्रणी-
र्नानातन्त्रविधानसाधनयुतो ह्यासीत्सतां वल्लभः ।
तन्त्रानेकक्रियासु सिद्धिमविदन् गत्वानुतापं मुहु-
श्चक्रे शङ्करसन्निधौ सुविनयं त्यक्त्वाशनं सर्वथा ॥२॥

अनेक प्रकार की तन्त्र शास्त्र की क्रियाओं को जाननेवाला और सज्जनों का प्यारा, संन्यासियों में श्रेष्ठ, शिवगिरि नाम के सन्यासी त्र्यम्बक पर्वत पर निवास करते थे। उन्होंने तन्त्र की अनेक क्रियाओं को विधिवत् किया परन्तु सिद्धि प्राप्त न होने से दुःखित हो, अन्न, जल को छोड़, श्रीशिवजी के समीप विनीत हो प्रार्थना किया ॥ २ ॥

तस्मै श्रीगिरिजापतिःकथितवान् स्वप्ने प्रयोगाञ्छुभान् ।
येभ्यः सिद्धिमनुत्तमामनुभवञ्जातश्च सिद्धाग्रणीः ॥
सोऽस्माकं बहुसेवया कथितवान् प्रत्यक्षसिद्धिप्रदां-
स्तान् मन्त्रान् प्रकटीकरोमि सुधियामानन्ददानद्भुतान् ॥

उससे महादेवजी ने अच्छे २ प्रयोग स्वप्न में कहा जिसके करने से वह सिद्ध पुरुषों में अग्रणी हो गया। उसकी मैंने बहुत सेवा की तब उसने प्रत्यक्ष सिद्धि देने वाले मन्त्रों को बतलाया ॥ ३ ॥

यथा शिवगिरि देवः स्वप्ने कथितवान् हरः ।
तेनैव विधिना वक्ष्ये तन्त्रं मन्त्रसमन्वितम् ॥ ४ ॥

जिस प्रकार महादेव जी ने शिवगिरि को स्वप्न में कहा उसी विधि को मन्त्र समन्वित मैं कहता हूँ ॥ ४ ॥

स्वप्ने तु गिरिशं दृष्ट्वा त्र्यम्बकं वृषवाहनम् ।
पार्वत्या सहितं देवं योगी पप्रच्छ सादरम् ॥ ५ ॥

तीन नयन वाले पार्वती के सहित, बैल पर चढ़े, श्रीशिवजी को स्वप्न (ध्यान) में देख कर, सन्यासियों के गुरू, योगियों में पूज्य, शिवगिरि ने आदर सहित यह पूछा ॥५॥

नमामि सच्चिदानन्दं जगद्योनिसुमापतिम् ।
छिन्धि मे संशयं देव ! नाऽन्यथा जीवितं मम ॥ ६ ॥

हे सत् चित् आनन्द स्वरूप ! संसार के आदि कारण ! पार्वती के प्रियपति शिवजी ! आप मेरेमन के सन्देह को दूर कीजिए, नहीं तो निराहार मैं आपके चरणों पर अपना प्राण त्याग करूंगा ॥६॥

भवता कथिता मन्त्रास्ते कथं सिद्धिवर्जिताः ।
मया परीक्षिताः सर्वे योगयुक्तेन चेतसा ॥ ७ ॥

क्योंकि आप से प्रयुक्त तन्त्र शास्त्र में मारण से लेकर रसायन

पर्यन्त जो नौ क्रियाएँ हैं उनको उनके मन्त्र और विधियों से मन लगा कर किया परन्तु सिद्धि न होने से अब मेरा मन विह्वल सा हो गया है।

ये मन्त्रा लोकविख्यातास्ते सर्वे कीलिता मया।
तस्मात् सिद्धिविहीनास्ते याता निःसारतां भुवि ॥ ८ ॥

शिवजी ने कहा हे योगिराज ! तन्त्र शास्त्र में जितने मन्त्र प्रसिद्ध हैं उनको मैंने कीलित किया है। इसलिये वे मन्त्र निःसार होकर सिद्धि को देनेवाले नहीं हुए ॥ ८ ॥

तस्मादुत्तिष्ठ भद्रं ते कथयामि सुसिद्धिदान्।
मन्त्रानकीलितान् वत्स! यैस्त्वं सिद्धो भविष्यसि ॥ ९ ॥

इस कारण हे पुत्र ! तुम्हारा कल्याण हो, तुम चिन्ता को छोड़ो। सिद्धि को देने वाले बिना कीले हुए मन्त्रों को, मैं तुम्हारे हित के लिये और लोकोपकार के लिये कहता हूँ ॥ ९ ॥

मारणं मोहनं स्तम्भं विद्वेषोच्चाटनं वशम्।
आकर्षणं यक्षिणीं च रसायनकरं तथा ॥ १० ॥

मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, वशीकरण, आकर्षण, स्तंभन, वीर अथवा यक्षिणियों के साधन, और रसायन इन नौ क्रियाओं तथा इनकी विधियों से युक्त ॥ १० ॥

प्रयोगैर्नवभिर्युक्तं तन्त्रं माहेश्वराभिधम्।
इदं ते कथयिष्यामि लोकानां हितकाम्यया ॥ ११ ॥

माहेश्वर नाम का तन्त्र संसार के हित के लिये तुम से कहता हूँ जिस प्रयोग को इस विधि से करने वाले को तत्काल सिद्धि का लाभ हो। यह मेरा कहा हुआ प्रयोग सत्य है, इसमें संशय नहीं करना ॥ ११ ॥

—❀—

अथ द्वितीयाङ्कः ।

ईश्वर उवाच—

अथाऽतः कथयिष्याभि प्रयोगं मारणाभिधम् ।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणुष्वावहितो मुने ! ॥ १ ॥

शिवजी ने कहा कि तन्त्र शास्त्र में सब से पूर्व मारण का प्रयोग लिखा है इसलिये मारण को कहता हूँ । हे योगीराज ! तुम सावधान होकर सुनो ॥ १ ॥

मारणं न वृथा कार्यं यस्य कस्य कदाचन ।
प्राणान्तसङ्कटे जाते कर्तव्यं भूतिमिच्छता ॥ २ ॥

विना कारण किसी के अनिष्ट की अथवा अपने लाभ की इच्छा से मारण नहीं करना चाहिये, मारण का प्रयोग जब करे जब किसी के द्वारा अपने प्राण पर विपत्ति पड़े तब करना चाहिये ॥ २ ॥

ब्रह्मात्मानं तु वितनं दृष्ट्वा विज्ञानचक्षुषा ।
सर्वत्र मारणं कार्यमन्यथा दोषभाग्भवेत् ॥ ३ ॥

क्योंकि सब प्राणी ईश्वर के अंश हैं जैसा कि लिखा है कि (ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः) भगवान् स्वयं कहते हैं कि यह संसार हमारा स्वरूप है, इस प्रकार ज्ञान रूपी नेत्रों से देख अर्थात् विचार कर मारण का प्रयोग करना चाहिये, इसके अतिरिक्त प्रयोग करने में दोष का भागी होता है ॥ ३ ॥

मूर्खेण तु कृते तन्त्रे स्वस्मिन्नेव समापयेत् ।
तस्माद्रक्ष्यं सदाऽऽत्मानं मारणं न क्वचिच्चरेत् ॥ ४ ॥

अज्ञानी मूर्ख यदि मारण प्रयोग करता है तो उसका फल उसी को होता है अर्थात् वह स्वयं मर जाता है । इसलिए अनिष्ट चाहने वाले शत्रु पर यदि मारण प्रयोग करना हो तो पहिले अपनी रक्षा करे, फिर जहाँ तक हो सके वहाँ तक प्रयोग करे ॥ ४ ॥

कर्त्तव्यं मारणं चेत् स्यात्तदा कृत्यं समाचरेत्।
शत्रुपादतलात् पांसुं गृह्णीयाद्भौमवासरे ॥ ५ ॥

मारण विधि में पहिले मङ्गल के दिन स्नानादि नित्य कर्मों से निपट कर पवित्रता पूर्वक शत्रु के पैर के नीचे की धूलि को मौन होकर लावे और उसको एकान्त स्थान में रखे ॥ ५ ॥

गोमूत्रेण च सिञ्चित्वा प्रतिमां कारयेद्द्विषः।
निर्जने च नदीतीरे स्थापयेत् स्थण्डिलोपरि ॥ ६ ॥

फिर किसी पात्र में गोमूत्र को लावे, उस धूल को गोमूत्र से गीला करके शत्रु की मूर्ति बनावे और निर्जन नदी के तट पर पहिले से बनाई हुई वेदी पर उस मूर्ति को स्थापित करे ॥ ६ ॥

लोहशूलं च निखनेत्तद्वक्षसि सुदारुणम्।
तद्वामे भैरवं कृष्णं बलिभिः प्रत्यहं यजेत् ॥ ७ ॥

फिर उस मूर्ति की छाती में तीक्ष्ण और कठिन लोहे का एक त्रिशूल गाड़ देवे, और उसकी बाईं ओर बलिदान देकर काल भैरव का नित्य षोडशोपचार से पूजन किया करे ॥ ७ ॥

एकादशबटूंस्तत्र परमान्नेन भोजयेत्।
अखण्डदीपं तस्याऽग्रे कटुतैलेन ज्वालयेत् ॥ ८ ॥

और उसी जगह ग्यारह बालकों को पक्कान्न भोजन करावे, और उस मिट्टी की प्रतिमा के आगे कडुआ तेल का अविच्छिन्न दीपक जलावे अर्थात् कार्य सिद्धिपर्यन्त दिन रात वह दीपक जलता रहे, दीपक बुझ जाने पर कार्य सिद्धि में विघ्न हो सकता है ॥ ८ ॥

व्याघ्रचर्मासनं कृत्वा निवसेत् तस्य दक्षिणे।
दक्षिणाभिमुखो रात्रौ जपेन्मन्त्रमतन्द्रितः ॥ ९ ॥

आसन प्रकरण में तन्त्र शास्त्र का वचन है कि मारण प्रयोग में व्याघ्र के चमड़े का आसन बिछाकर उससे दक्षिण की ओर बठे, और रात्रि

को दक्षिण दिशा की ओर मुख करके सावधान होकर निम्नलिखित मन्त्र को जपे ॥ ९ ॥

"ॐ नमो भगवते कालभैरवाय कालाग्नितेजसे अमुकं मे शत्रुं मारय मारय, पोथय पोथय हूँ फट् स्वाहा" इस मन्त्र को एकाग्र चित्त सावधान होकर जप की विधि से जप करे।

अयुतं प्रजपेदेनं मन्त्रं निशि समाहितः।
एकोनत्रिंशदिवसैर्मारणं जायते ध्रुवम् ॥१०॥

इस मारण मन्त्र को रात्रि समय में दश हजार प्रति दिन जप करने से निश्चय २९ उन्तीस दिन में उसके शत्रु का मारण हो जायगा, इस प्रयोग में सन्देह नहीं करना चाहिये ॥ १० ॥

इत्येवं मारणं तन्त्रं सद्यः सिद्धिकरं नृणाम्।
कथितं शिवगिरे तुभ्यं मोहनं शृण्वथोपरम् ॥११॥

यह मारण तन्त्र मनुष्यों को तत्काल सिद्धि देने वाला है। हे योगिराज ! अब मोहन प्रयोग को सुनो ॥११॥

तृतीयाङ्कः।

ईश्वर उवाच—

अथाऽतः सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं मोहनाभिधम्।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणु योगीन्द्र ! यत्नतः ॥ १ ॥

अब मोहन प्रयोग को कहता हूँ। जिस प्रयोग से मनुष्यों को तत्काल सिद्धि मिल सकती है उस प्रयोग को सावधान हो कर सुनो ।१।

पेषयेत् तुलसीबीजं सहदेव्या रसेन च।
रवौ यस्तिलकं कुर्यान्मोहयेत् सकलं जगत् ॥ २ ॥

रविवार के दिन सहदेवी (सहदेइया घास) के रस में तुलसी

वृक्ष के बीज को पीसे, मोहन मन्त्र से उसका तिलक लगावे तो सम्पूर्ण जगत् को वश में कर सकता है ॥२॥

हरितालं चाऽश्वगन्धां पेषयेत् कदलीरसैः।
गोरोचनेन संयुक्तं तिलकं लोकमोहनम् ॥ ३ ॥

रविवार या मंगलवार को हरताल, असगन्ध और गोरोचन को केले के रस में पीस कर मोहन मन्त्र से तिलक लगावे तो संसार को मोहित कर ले ॥३॥

भृङ्गीचन्दनकुष्ठेन वचाधूपेन धूपयेत्।
वस्त्राणि च मुखं चैव सर्वजन्तून् विमोहयेत् ॥ ४ ॥

रविवार के दिन काकड़ासिंगी, चन्दन, कूट और बच इन चार चीजों का धूप मुख और अपने कपड़े में देने से सब को मोहित कर सकता है ॥४॥

मनःशिलां च कर्पूरं पेषयेत् कदलीरसैः।
तिलकं मोहनं नृणां नाऽन्यथा मम भाषितम् ॥ ५ ॥

रविवार के दिन मैनसिल, और कपूर इन दो चीजों को केले के रस में पीसकर मोहन मन्त्र से तिलक करे तो मनुष्यों को मोहित कर ले, यह मेरा कहना सत्य है, इसमें संशय नहीं॥ ५ ॥

सिन्दूरं कुङ्कुमं चैव गोरोचनसमन्वितम्।
धात्रीरसेन संपिष्टं तिलकं लोकमोहनम् ॥ ६ ॥

रविवार के दिन सिन्दूर, केसर और गोरोचन इन तीन चीजों को आँवले के रस में पीस कर मोहन मन्त्र से तिलक करे तो संसार को मोहित कर सकता है ॥६॥

औदुम्बरस्य पुष्पेण वर्तिं कृत्वा प्रदीपयेत्।
नवनीतेन संयुक्तं कज्जलं लोकमोहनम् ॥ ७ ॥

रविवार के दिन गूलर के फूल की बत्ती बनाकर मक्खन के साथ

उसको जलावे, पश्चात् उसका काजल आँख में लगाने से संसार को मोहित कर ले ॥७॥

श्वेतार्कमूलमादाय श्वेतचन्दनसंयुतम् ।
अनेन तिलकं भाले मोहनं जगतो भवेत् ॥८॥

सफेद आक की जड़ और सफेद चन्दन इनको पीस कर एक में मिला कर रगड़े और मोहन मन्त्र से उसका तिलक लगावे तो संसार को मोहित कर सकता है ॥ ८ ॥

विजयावचमादाय श्वेतसर्षपसंयुतम् ।
उद्वर्तनेन देहस्य जगतो मोहनं भवेत् ॥९॥

विजया, वच और सरसो इनको पीस कर एक में मिलावे उसका उबटन लगावे तो संसार को मोहित करे ॥ ९ ॥

मोहन मन्त्रः—ॐ रक्तचामुण्डे सर्वजनान् मोहय मोहय मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा । सपादलक्षजपात् सिद्धिर्भवति ।

इस मोहन मन्त्र को जप की विधि से सवा लाख जप करने से मोहन की सिद्धि होती है ।

—❀—

चतुर्थाङ्कः ।

ईश्वर उवाच—

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगस्तम्भनाभिधम् ।
यस्य साधनमात्रेण सिद्धिः करतले भवेत् ॥१॥

शिवजी कहते हैं—हे योगिराज ! अब अग्निस्तंभन, आसन स्तंभन, बुद्धिस्तंभन का प्रयोग कहता हूँ, सुनो ! । जिसके साधन करने से सिद्धि हाथ में आ जाती है ॥ १ ॥

कुमारीरसयुक्तेन तैलेनाभ्यङ्गमाचरेत् ।
अग्निना न दहेदङ्गमग्निस्तम्भः प्रजायते ॥२॥

सफेद घृत कुमार (घीकुवार) के रस को तेल में मिला कर शरीर में लगाने से शरीर अग्नि में जलता नहीं बल्कि अग्नि का स्तम्भन हो जाता है ॥ २ ॥

कदलीरसमादाय कुमारीरसं लेपयेत् ।
अर्कदुग्धं तथा युक्तमग्निस्तम्भः प्रजायते ॥ ३ ॥

केले का रस और घृत कुमार (घीकुवार) का रस तथा आक (मन्दार) का दूध इनको एक में मिला कर स्तम्भन मन्त्र से लगाने से अग्नि स्तम्भन हो जाता है ॥ ३ ॥

कुमारीरसलेपेन किञ्चिद्वस्तु न दह्यते ।
अग्निस्तम्भनयोगोऽयं नाऽन्यथा मम भाषितम् ॥ ४ ॥

घीकुवार के रस का लेप करने से कोई वस्तु आग में जलती नहीं, यह मेरा कहना मिथ्या नहीं है । यह अग्निस्तम्भन का योग है ॥ ४ ॥

स्तेम्भन मन्त्रः—

ॐ नमो अग्निरूपाय मम शरीरे स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र को एक लाख जप करने से स्तम्भन प्रयोग सिद्ध होता है ।

नृकपाले मृदं क्षिप्त्वा श्वेतगुञ्जा च निर्वपेत् ।
गोदुग्धेन तु संसिच्य कुर्याद्गुञ्जालतां शुभाम् ॥ ५ ॥

मनुष्य के कपाल (खोपड़ी) में मिट्टी भर कर उसमें सफेद घुँघची का बीज बोवे, फिर उस बीज को गौ के दूध से सींचने पर उसमें से घुँघची का सुन्दर वृक्ष निकाला हुआ दिखाई पड़ेगा ॥ ५ ॥

यस्याङ्गे तल्लता क्षिप्ता स्थानस्तम्भः प्रजायते ।
यस्य नाम्ना च लवणं श्मशानाग्नौ जुहेत्तथा ॥ ६ ॥

वह वृक्ष जिसके अङ्ग पर डाल दिया जाय उसी के आसन का स्तम्भन हो जायगा । और जिसका नाम लेकर मृतक पर चिता की अग्नि में लवण (नोन) से होम करे तो उस मनुष्य का भी स्तम्भन हो जावे ॥६॥

आसनस्तम्भनमन्त्रः—ॐ नमो दिगम्बराय अमुकस्यासनं स्तम्भय स्तम्भय फट् स्वाहा ॥ अस्य मन्त्रस्य लक्षजपात् सिद्धिर्भवेति ।

इस स्तम्भन मन्त्र का एक लाख जप करने से सिद्धि होती है पहिले मन्त्र सिद्ध करके पीछे कार्य करे ।

भृङ्गराजमपामार्गं सिद्धार्थं सहदेविका ।
कोलं वचा च श्वेतार्कः सत्त्वमेषां समाहरेत् ॥७॥

भंगराई, चिचिड़ी, सरसों, सहदेवी, कंकोल वच और आंक (मन्दार) की जड़ लेकर इन सबका सत निकाले ॥ ७ ॥

लोहपात्रे विनिक्षिप्य त्रिदिनं मर्दयेत् सुधीः ।
ललाटे तिलकं कुर्याद्द्रष्टुर्बुद्धिः प्रणश्यति ॥ ८॥

उस सत को लोहे के पात्र में रख कर तीन दिन तक घोंटे फिर उसका तिलक मस्तक में लगावे । उस तिलक को जो देखे उसकी बुद्धि क्षण भर में नष्ट हो जावे ॥ ॥ ८ ॥

उल्लूकस्य कपेर्वाऽपि ताम्बूले यस्य दापयेत् ।
विष्ठाप्रयत्नतस्तस्य बुद्धिस्तम्भः प्रजायते ॥ ९॥

उल्लू पक्षी अथवा वानर की विष्ठा पान में रख कर जिसे खिलावे उसी की बुद्धि का स्तम्भन हो जावे ॥ ९॥

बुद्धिस्तम्भनमन्त्रः—ॐ नमो भगवते नृसिंहाय अमुकस्य बुद्धिस्तम्भनं कुरु कुरु फट् स्वाहा । सपादलक्षजपात् सिद्धिर्भवति ॥

इस मन्त्र का सवा लाख जप करने से सिद्धि होती है । मन्त्र सिद्ध होने पर स्तम्भन करना चाहिये ।

पुष्यार्कैऽहि समादाय अपामार्गस्य मूलकम् ।
घृष्ट्वा लिम्पेच्छरीरे स्वे शस्त्रस्तम्भः प्रजायते ॥१०॥

रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में चिचिड़ी की जड़ लाकर उसको रगड़ कर अपने शरीर में लेप करे तो शस्त्रों के घाव शरीर में नहीं लगते क्योंकि शस्त्रों का स्तंभन हो जाता है ॥ १० ॥

चिताङ्गारेण विलिखेन्मन्त्रं पात्रे च मृन्मये ।
रिपुनामयुतं तच्च जलकुण्डे विनिक्षिपेत् ॥११॥

चिता की राख को मिट्टी के बरतन में शत्रु के नाम के साथ मन्त्र लिख कर उसको जल से भरी कूंड़ी में गाड़ दे ॥ ११ ॥

शिलया स्तम्भयेद्द्वारं सेनास्तम्भः प्रजायते ।
उष्ट्रास्थि निखनेद्दिक्षु पशुस्तम्भः प्रजायते ॥१२॥

और उसके ऊपर से पत्थर की चट्टान से ढाँक दे तो चली हुई शत्रु की सेना का स्तंभन हो जावे । और जिस पशु के चारो ओर ऊँट की हड्डी को गाड़ दे उस पशु का स्तंभन हो जाता है ॥ १२ ॥

ऋतुमत्या योनिवस्त्रे लिखेद्गोरोचनैर्नरम् ।
तन्नाम्ना प्रक्षिपेत्कुम्भे नरस्तम्भः प्रजायते ॥१३॥

रजस्वला स्त्री की योनि के वस्त्र को लेकर उस वस्त्र पर गोरोचन से मनुष्य की मूर्ति बनावे, फिर उसके नाम के साथ उस वस्त्र को घड़े में गाड़ दे तो मनुष्य का स्तंभन हो जाता है ॥ १३ ॥

इष्टकासम्पुटं कृत्वा तस्मिन् मेघं समालिखेत् ।
श्मशानभस्मना स्थाप्य भूमौ स्तम्भः प्रजायते ॥१४॥

ईंट का संपुट बनाकर उसमें चिता की राख से बादलों का चित्र बनावे और उस चित्र को भूमि में गाड़ दे तो मेघों का स्तभन हो जाता है ॥ १४ ॥

मधुना वृहतीमूले रञ्जये लोचनद्वयम् ।
निद्रास्तम्भो भवेत्तस्य नाऽन्यथा मम भाषितम् ॥१५॥

शहद में भटकटैया की जड़ को रगड़ कर आँख में आँजन लगाने से निद्रा का स्तंभन हो जाता है अर्थात् निद्रा नहीं आती है ॥ १५ ॥

भरण्यां क्षीरकाष्ठस्य कीलं पञ्चाङ्गुलं खनेत् ।
नौकामध्ये तदा नौकास्तम्भनं जायते ध्रुवम् ॥१६॥

भरणी नक्षत्र में गूलर के काष्ठ का पाँच अंगुल का कील (खूँटा) बना कर नौका में गाड़ दे तो निश्चय नौका का स्तम्भन हो जावे, यह मेरा कहना मिथ्या नहीं है ॥ १६ ॥

पुष्यार्केण तु गृह्णीयात् कृष्णधत्तूरमूलकम् ।
कट्यां बध्वा गर्भिणीनां गर्भस्तम्भः प्रजायते ॥१७॥

रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में काले धतूरा की जड़ को लेकर गर्भिणी के कमर में बाँध देवे तो गर्भ का स्तम्भन हो जाता है ॥ १७ ॥

बिम्बाकाष्ठस्य धूपेन योनिं धूपयते यदा ।
मुक्तगर्भा तदा नारी जायते नाऽत्र संशयः ॥१८॥

बिंबा काष्ठ के धूएँ से योनि में धूप देने से स्त्री का गर्भ पतन हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ १८ ॥

ॐ नमो भगवते महानृसिंहाय सर्वस्तम्भनकर्त्रे सर्वस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा । सपादलक्षजपात् सिद्धिर्भवति । इस मन्त्र का सवा लाख जाप करने से स्तंभन प्रयोग सिद्ध होता है ।

—:०:—

पञ्चमाङ्कः ।

ईश्वर उवाच—

अथाऽतः शृणु योगीन्द्र ! प्रयोगं द्वेषणाभिधम् ।
अस्मिन् कृते महासिद्धिर्जायते द्वेषणात्मिका ॥ १ ॥

श्रीशिवजी बोले हे योगिराज ! अब द्वेषण प्रयोग को कहता हूँ । सावधान होकर सुनो, इस प्रयोग को करने से द्वेषणप्रयोग में बड़ी सिद्धि प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

मार्जारकमूषकयोर्विष्ठामादाय यत्नतः ।
विद्विषः पादतलतो मृदमादाय मिश्रयेत् ॥ २ ॥

बिलाव और चूहे का विष्ठा लेकर उसमें शत्रु के पैर के नीचे की मिट्टी को लेकर मिलावे ॥ २ ॥

जपेन्मन्त्रशतं कुर्यान्नरपुत्तलिकां शुभाम् ।
नीलवस्त्रेण संवेष्ट्य तद्गृहे निखनेद्यदि ॥ ३ ॥

फिर विद्वेषण मन्त्र का सौ बार जप करके उससे आदमी का पुतला बनावे, उस मूर्ति में नीला कपड़ा लपेट कर उसके घर में गाड़ दे ॥ ३ ॥

विद्वेषो जायते शीघ्रं पितापुत्रावपि ध्रुवम् ।
चिताभस्मयुतं बभ्रे सर्पयोर्दन्तचूर्णकम् ॥ ४ ॥

तो पिता पुत्र की भी लड़ाई हो जावे । फिर साँप और नेवले के दाँत को लेकर एक में पीस डाले फिर उसमें चिता की राख को मिलावे ।४।

पृथक् पुत्तलिकां कृत्वा तत्तन्नाम्नाभिमन्त्रिताम् ।
उद्याने निखनेद्भूमौ विद्वेषो जायते ध्रुवम् ॥ ५ ॥

और फिर उसकी अलग अलग मूर्ति बना कर उनके नाम को लेकर मन्त्रों से उन मूर्तियों पर जल का छींटा देवे और किसी बगीचे की भूमि में उन मूर्तियों को गाड़ देवे तो उनमें आपस में लड़ाई हो ॥ ५ ॥

गजकेशरिणोर्दन्तान् नवनीतेन पेषयेत् ।
यन्नाम्ना हूयते चाग्नौ तयोर्विद्वेषणं भवेत् ॥ ६ ॥

हाथी और व्याघ्र के दाँतों को पीस कर और उनमें मक्खन मिला कर जिसका नाम लेकर अग्नि में होम करे तो उनमें अवश्य लड़ाई हो जावे ॥ ६ ॥

द्वेषणका मन्त्र—ॐ नमो नारदाय अनयोर्विद्वेषं कुरु कुरु ऐं ह्रीं क्लीं फट् स्वाहा । चतुर्लक्षजपात् सिद्धिर्भवति ।

इस मन्त्र को चार लाख जप करने से सिद्धि होती है, बिना मन्त्र सिद्ध किये प्रयोग में सिद्धि नहीं हो सकती ।

—:※:—

षष्ठाङ्कः ।

ईश्वर उवाच-

शृणु योगीन्द्र ! वक्ष्यामि उच्चाटनविधिं परम् ।
यस्य साधनमात्रेण भवेदुच्चाटनं नृणाम् ॥ १ ॥

फिर शिवजी बोल हे योगीन्द्र ! में उच्चाटन की उत्तम विधि को कहता हूँ सावधान होकर, सुनो—। जिस प्रयोग के करने से मनुष्यों का उच्चाटन हो जाता है ॥ १ ॥

ब्रह्मदण्डी चिताभस्मसिद्धार्थैः संप्रलेपयेत् ।
शिवलिङ्गं मन्दवारे तद्गृहीत्वा गृहे क्षिपेत् ॥ २ ॥

शनिवार के दिन ब्रह्मदण्डी, चिता की भस्म, सरसों में पीस कर शिवजी के लिङ्ग पर लेपन करे फिर उस लेपन को लाकर जिस के घर में फेंके ॥ २ ॥

यस्य तस्योच्चाटनं स्यात् पशुपुत्रादिभिः सह ।
काकोलूकस्य पक्षाणि यस्य चुल्ल्यां खनेद्रवौ ॥ ३ ॥

उसका पशु और परिवार सहित उच्चाटन हो जाता है । कौआ और उल्लू के पङ्ख को रविवार को जिसके चूल्हे में गाड़ दे ॥ ३ ॥

उच्चाटनं भवेत्तस्य नाऽन्यथा मम भाषितम् ।
आर्द्रोदुम्बरकाष्ठस्य कीलकं चतुरङ्गुलम् ॥ ४ ॥

उसका उच्चाटन हो यह मेरा कहना झूठा नहीं है । गूलर का गीला काष्ठ का चार अंगुल का कील लेकर ॥ ४ ॥

शयने यस्य निखनेत्तस्योच्चाटनकं ध्रुवम् ।
उलूकविष्ठामपि वा निखनेच्छयने तथा ॥ ५ ॥

जिस के पलङ्ग में उरस दे उसका निश्चय उच्चाटन हो । अथवा उल्लू की विष्ठा शय्या में लगा दे तो उसका भी उच्चाटन हो जाता है ॥ ५ ॥

नरास्थिकीलकं द्वारि निखनेच्चतुरङ्गुलम्।
तत्र मूत्रं तु यः कुर्यात्तस्योच्चाटनकं भवेत्॥ ६॥

आदमी की हड्डी की चार अङ्गुल की कील दरवाजे पर गाड़ देवे और वहाँ जो मूत्र करे तो उसका उच्चाटन हो जावे॥ ६॥

उच्चाटन का मन्त्रः—ॐ नमो भगवते महारुद्राय रौद्ररूपाय अमुकस्य सपरिवारस्योच्चाटनं कुरु कुरु फट् स्वाहा।

इस मन्त्र का सवा लाख जप करने से सिद्धि होती है। बिना मन्त्र सिद्ध किये प्रयोग नहीं करना चाहिये।

सप्तमाङ्कः।

ईश्वर उवाच—

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि वशीकरणमद्भुतम्।
यत्प्रयोगाद्वशं यान्ति नरा नार्यश्च सर्वशः॥ १॥

श्रीशिवजी बोले—हे सन्यासिन्! अब अद्भुत वशीकरण कहता हूँ, सुनो, जिस के प्रयोग से पुरुष, स्त्री सब वश में हो जाते हैं॥ १॥

ब्रह्मदण्डीवचाकुष्ठचूर्णं सूर्यस्य वासरे।
ताम्बूलेन तु ये दद्यात् स वश्यो वर्तते सदा॥ २॥

रविवार के दिन ब्रह्मदण्डी, वच और कूट इनका चूर्ण पान में रख कर जिसको खिला दे वह सदा के लिये वश में हो जावे॥ २॥

सहदेवीं गृह्य पुष्यार्के छायाशुष्कां विधाय च।
दद्याच्चूर्णं तु ताम्बूले सर्वलोकवशं नयेत्॥ ३॥

रविवार के दिन पुष्यनक्षत्र में सहदेवी को लाकर छाया में सुखा लेवे उसका चूर्ण पान में रख कर जिसको देवे उसको वश में कर लेवे॥ ३॥

देवदाल्या च सिद्धार्थैर्गुटिकां कारयेद्बुधः।
मुखे निक्षिप्य भाषेत सर्वलोकान् वशं नयेत्॥ ४॥

देवदाली और सरसों की गोली बना कर और उसे मुख में रखकर बातचीत करे तो सब संसार के लोग वश में हो जावें ॥ ४ ॥

कुङ्कुमं तगरं कुष्ठं हरितालं मनःशिला ।
अनामिकाया रक्तेन तिलकं वश्यकारकम् ॥ ५ ॥

केसर, तगर, कूट, हरताल और मैनसिल इनको एक में मिलाकर उसमें अनामिका अङ्गली का रक्त मिला कर तिलक करे तो सब को वश में कर लेवे ॥ ५ ॥

वशीकरण मन्त्र—ॐ ह्रीं नमो मोहिन्यै सर्वलोकान् मे वशं कुरु कुरु हुंफट् स्वाहा । सपादलक्षजपात् सिद्धिर्भवति ।

इस मन्त्र को सवालाख जप करने से सिद्धि होती है । बिना मन्त्र सिद्ध किये प्रयोग नहीं करना चाहिये ।

स्त्रीवश्यम् ।

करपादनखानां च भस्म ताम्बूलपत्रके ।
दातव्यं रविवारे च वशीकरणमद्भुतम् ॥ ६ ॥

रविवार के दिन हाथ और पैर के नखों की राख पान में रख कर खिला देवे तो स्त्री वश में हो जावे ॥ ६ ॥

भौमवारे लवङ्गं च लिङ्गछिद्रे च निक्षिपेत् ।
बुधे निष्कास्य ताम्बूले दद्यात् सा वशगा भवेत् ॥ ७ ॥

मंगलवार के दिन एक लौंग लेकर लिङ्ग के छिद्र में रख देवे । दूसरे दिन उसको निकाल कर पान में रख कर जिस स्त्री को खिला देवे वह उसके वश में हो जावे ॥ ७ ॥

वामपादतलात् पांसुर्वनितायाः शनौ हरेत् ।
तस्य पुत्तलिकां कुर्यात्तस्याः केशान् नियोजयेत् ॥ ८ ॥

शनिवार के दिन स्त्री के बाएं पैर के नीचे से मिट्टी ले आवे उसकी पुतली बनाकर उस मूर्ति में बाल लगावे ॥ ८ ॥

नीलवस्त्रैर्वेष्टयित्वा स्ववीर्यं तु भगे क्षिपेत्।
सिन्दुरेण समायुक्तां निखनेद्द्वारदेशके ॥ ९ ॥

फिर उस स्त्री की पुतली को नीले कपड़े से लपेट कर उसके भग में अपना वीर्य गिरावे और फिर सिन्दूर लगाकर उस पुतली को उसी स्त्री के दरवाजे पर गाड़ देवे ॥ ९ ॥

उल्लङ्घनाद्वशं याति प्राणैरपि धनैरपि।
कृतज्ञः स्ववशं कुर्यान्मोदते सुचिरं भुवि ॥१०॥

उस पुतली को लांघने से वह स्त्री धन और प्राण सहित वश में हो जावे। फिर कार्य में कुशल मनुष्य उस स्त्री के साथ चिरकाल तक पृथ्वी पर आनन्द करे ॥ १० ॥

तालीसकुष्ठतगरैर्लिप्तां क्षौमीं सुवर्तिकाम्।
सिद्धार्थतैले निक्षिप्य कज्जलं नरमस्तके ॥११॥

रेशम की बत्ती बनाकर तालीस, कूट और तगर इनको पीसकर उस बत्ती में लपेट कर मनुष्य की खोपड़ी में सरसों का तेल भरकर उस बत्ती को जलावे और उसका काजल पारे ॥११॥

पातयेदं जनात्तस्य सर्वदा भुवनत्रये।
दृष्टिगोचरमायातः सर्वो भवति दासवत् ॥१२॥

उस काजल को आँख में लगाने से हर समय सामने आए हुए मनुष्य दास के समान हो जावेंगे, इस प्रयोग में संशय नहीं करना चाहिये ॥१२॥

विप्राय वेदविदुषे दत्त्वा कर्षसुवर्णकम्।
एतन्मन्त्रं जपेद्यत्नाद्वश्यं सिद्ध्यति नाऽन्यथा ॥१३॥

वेदपाठी ब्राह्मण को सोलह मासे सोना देकर प्रयत्न पूर्वक इस निम्नलिखित वशीकरण मन्त्र का सवालाख जप करने से सिद्धि होती है, इसमें संशय नहीं ॥१३॥

स्त्री वशीकरण मन्त्रः—ॐ नमः कामाक्ष्यै देव्यै अमुकीं मे वशं कुरु कुरु फट् स्वाहा। सपादलक्षजपात् सिद्धिर्भवति।

इस वशीकरण मन्त्र का सवालाख जप करने से सिद्धि होती है।

राजवश्यम्।

विष्णुक्रान्ताबीजतैलं दीपे प्रज्वाल्य यत्नतः।
दर्शे कार्तिकमासस्य सोमवारेऽर्द्धरात्रके ॥१४॥

कार्तिक में दीपावली के दिन सोमवार पड़े तो आधी रात के दिन विष्णुक्रान्ता के बीज का तेल लेकर उसको दिया में भर दे फिर बत्ती डाल कर दिया जलावे ॥१४॥

कज्जलं पातयेद्धीमाञ्छुभ्रे हेमशरावके।
तदञ्जनाच्चक्रवर्ती राजा वशमवाप्नुयात् ॥१५॥

फिर सोने की साफ कटोरी में काजल पारे, उसको आँख में लगाने से चक्रवर्ती राजा भी वश में हो जाता है ॥१५॥

भौमवारे दर्शदिने कृत्वा नित्यक्रियाः शुचिः।
वने गत्वा ह्यपामार्गवृक्षं पश्येदुदङ्मुखः ॥१६॥

मंगलवार के दिन अमावस्या हो तो अपने नित्य कर्म से निपट कर पवित्रता पूर्वक बन में चला जाय और उत्तर की तरफ मुख करके चिचिढी के वृक्ष को देखे ॥१६॥

तत्र विप्रं समाहूय कृत्वा पूजां यथाविधिः।
पलमेकं सुवर्णस्य दद्यात्तस्मै द्विजन्मने ॥१७॥

वहाँ ब्राह्मण को बुलाकर उस चिचिढी के वृक्ष को विधिपूर्वक पूजा करके उस ब्राह्मण को ६४ चौसठ मासे सोना देवे ॥१७॥

तस्य हस्तेन गृह्णीयादपामार्गस्य बीजकान्।
मौनेन स्वगृहं गच्छेत् कृत्वा बीजांस्तु निस्तुषान् ॥१८॥

फिर उसके हाथ से चिचिढी के बीज को तोड़वा कर उस बीज को

चुपचाप अपने घर में लाकर उस बीज का छिलका निकाल कर उसको साफ करे ॥१८॥

गौरीशं हृदये ध्यात्वा राजानं खादयेच्च तान् ।
येन केनाप्युपायेन यावज्जीवं भवेद्वशे ॥१९॥

फिर शिवजी का ध्यान करके उस बीज को किसी उपाय से राजा को खिला देवे तो वह राजा जीवन पर्यन्त उसके वश में हो जावे॥१९॥

चक्रवर्त्ती वशं याति नाऽन्यथा मम भाषितम् ।
न नीचाय प्रदातव्यं प्रयोगमनुभूतिदम् ॥२०॥

इस उपाय और प्रयोग से चक्रवर्ती भी राजा वश में हो सकता है, यह मेरा वचन मिथ्या नहीं है, यह प्रयोग ऐश्वर्य को देने वाला है। यह नास्तिक और विश्वास न करने वाले को नहीं कहे ॥२०॥

राजवश्यमन्त्रः—ॐ नमो भास्कराय जगदात्मने राजानं वशमानय कार्यं कुरु कुरु फट् स्वाहा । सपादलक्षजपात् सिद्धिर्भवति ।

इस मन्त्र का सवा लाख जप करने से सिद्धि होती है। बिना मन्त्र सिद्ध किये प्रयोग नहीं करना चाहिये ।

——

अष्टमाङ्कः ।

ईश्वर उवाच—

अथाकृष्टिं प्रवक्ष्यामि शृणुष्वैकमना मुने !
यस्य प्रयोगात् कृष्यन्ते अपि दूरस्थिता नराः ॥ १ ॥

श्री शिवजी ने कहा हे योगिन् ! अब मैं आकर्षण प्रयोग को कहता हूँ। तुम एकाग्र मन होकर सुनो। इस आकर्षण का प्रयोग करके दूर में रहने वाले मनुष्य को अपने समीप बुला सकता है ॥१॥

कृष्णधत्तूरपत्राणां रसैर्गोरोचनायुतैः ।
करवीरस्य लेखिन्या यन्त्रं पञ्चदशं लिखेत् ॥२॥

काले धतूरे के पत्ते के रस में गोरोचन मिलाकर कनैल की कलम से पन्द्रह का यन्त्र ॥२॥

भूर्जपत्रेषु तन्नाम्ना तापयेत् खदिराग्निना ।
शतयोजनगो वाऽपि शीघ्रमायाति नाऽन्यथा ॥३॥

भोजपत्र पर लिख कर जिसका आकर्षण करना हो उसका नाम लेकर उस यन्त्र को खैर की आंच से तपावे तो सौ योजन दूर रहने वाला भी जल्दी से आ जावे, इसमें संशय नहीं ॥३॥

नृकपाले लिखेद्यन्त्रं गोरोचन-सकुङ्कुमैः ।
खदिराङ्गारकैस्ताप्यं त्रिसन्ध्यं यस्य नामतः ॥४॥

गोरोचन और कुंकुम मिलाकर मनुष्य की खोपड़ी में उस यन्त्र को लिख कर और उस आदमी का नाम लेकर तीनों काल खैर की आँच से तपावे ॥ ४ ॥

मन्त्रं जपेत् सुसंसिद्धं कर्षयेदुर्वशीमपि ।
ब्रह्मदण्डीं समादाय पुष्यार्केण तु चूर्णयेत् ॥ ५ ॥

और सिद्ध मन्त्र का जप करे तो उर्वशी का भी आकर्षण हो जावे । रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में ब्रह्मदण्डी को ले आवे फिर छाया में सुखाकर उसका चूर्ण बना लेवे ॥ ५ ॥

कामार्तां कामिनीं दृष्ट्वा उत्तमाङ्गे विनिक्षिपेत् ।
पृष्ठतः सा समायाति नाऽन्यथा मम भाषितम् ॥ ६ ॥

फिर काम से पीड़ित जिस स्त्री को देखकर उसके सिर पर छोड़ देवे तो वह स्त्री उसके साथ हो जावे; यह मेरा कहना मिथ्या नहीं है ॥ ६ ॥

आकर्षण मन्त्रः—ॐ नमो वीरवेतालाय मन्दराचलवासिने अमुकम् आकर्षय आकर्षय ह्रीं क्लीं फट् स्वाहा । लक्षत्रयजपात् सिद्धिर्भवति ॥

यह आकर्षण मन्त्र तीन लाख जप करने से सिद्धि होती है । बिना मन्त्र सिद्ध किये प्रयोग करने में सफलता नहीं होगी ।

—:०:—

नवमाङ्कः ।

ईश्वर उवाच--

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यक्षिणीनां सुसाधनम् ।
यस्य सिद्धौ मनुष्याणां सर्वे सिद्ध्यन्ति हृच्छयाः ॥ १ ॥

श्री शिवजी बोले हे मुनि ! अब यक्षिणियों (चुड़ैलों) का साधन कहता हूँ सावधान होकर सुनो । जिसके सिद्ध करने से मनुष्य की सब अभिलाषा पूरी हो जाती है ॥ १ ॥

आषाढपूर्णिमायां तु कृत्वा क्षौरादिकाः क्रियाः ।
सितेज्ययोरमौढ्ये तु साधयेद्यक्षिणीं नरः ॥ २ ॥

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन क्षौर करा कर गुरु और शुक्र के उदय में यक्षिणी को मनुष्य सिद्ध करे ॥ २ ॥

प्रतिपद्दिनमारभ्य श्रावणेन्दुबलान्वितम् ।
मासमात्रप्रयोगोऽयं निर्विघ्नं विधिमाचरेत् ॥ ३ ॥

फिर श्रावण कृष्ण पड़िवा से चन्द्रमा को अनुकूल देखकर तीन मास तक निर्विघ्नता पूर्वक इस प्रयोग को करे ॥ ३ ॥

निर्जने बिल्ववृक्षस्य मूले कुर्याच्छिवार्चनम् ।
षोडशैरुपचारैस्तु रुद्रपाठसमन्वितम् ॥ ४ ॥

एकान्त स्थान में बेल के वृक्ष के नीचे शिवजी का षोडशोपचार से पूजन करे और रुद्री का पाठ करे ॥ ४ ॥

त्र्यम्बकेत्यस्य मन्त्रस्य जपं पञ्चसहस्रकम् ।
दिवसे दिवसे कृत्वा कुबेरस्य च पूजनम् ॥ ५ ॥

फिर "त्र्यम्बकं यजामहे०" इस मन्त्र का पाँच हजार जप करे और प्रतिदिन विधिवत् बलि आदि से धनाधिप कुबेरजी का पूजन किया करे ॥

कुबेरमन्त्रः—यक्षराज ! नमस्तुभ्यं शङ्करप्रियबान्धव ! ।
एकां मे वशगां नित्यं यक्षिणीं कुरु ते नमः ॥

इसी मन्त्र से कुबेर जी का प्रतिदिन विधिवत् पूजा करे।

इति मन्त्रं कुबेरस्य जपेदष्टोत्तरं शतम्।
ब्रह्मचर्येण मौनेन हविष्याशी भवेद्दिवा ॥ ६ ॥

और इसी कुबेर मन्त्र को एक सौ आठ बार जप करे। ब्रह्मचर्य से रहे, दिन में मौन धारण करे तथा हविष्यान्न भोजन करे ॥ ६ ॥

रात्रेस्तु मध्यमौ यामौ विनिद्रो मितभोजनः।
बिल्ववृक्षं समारुह्य जपेन्मन्त्रमिमं सदा ॥ ७ ॥

तथा रात्रि में कुछ भोजन करके निद्रा रहित हो बेल के वृक्ष के ऊपर बैठ जावे और इस निम्नलिखित मन्त्र का जप करे ॥ ७ ॥

यक्षिणीमन्त्रः—ॐ क्लीं ह्रीं ऐं ॐ श्री महायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ स्वाहा।

इति मन्त्रस्य च जपं सहस्रत्रयसम्मितम्।
कुर्याद्बिल्वसमारूढो मासमात्रमतन्द्रितः ॥ ८ ॥

इस यक्षिणी मन्त्र को बेल वृक्ष पर बैठकर सावधान होकर तीन मास तक प्रति दिन तीन हजार जप करे ॥ ८ ॥

मध्वामिषबलिं तत्र कल्पयेत् संस्कृतं पुरः।
नानारूपधरा यक्षी क्वचित्तत्रागमिष्यति ॥ ९ ॥

फिर यक्षिणी की बलि के वास्ते उत्तम मद्य और मांस अपने सामने रख ले क्योंकि अनेक रूप को धारण करने वाली यक्षिणी किसी न किसी समय वहाँ अवश्य आवेगी ॥ ९ ॥

तां दृष्ट्वा न भयं कुर्याज्जपे संसक्तमानसः।
यस्मिन् दिने बलिं भुक्त्वा वरं दातुं समर्थयेत् ॥१०॥

उसे देख कर भय नहीं माने, सावधान होकर अपना जप किया ही करे, जिस दिन बलि का भोजन कर वह वर देना चाहे ॥१०॥

तदा वरान् वै वृणुयात्तांस्तान् वै मनसेप्सितान्।

धनमानयितुं ब्रूयादथवा कर्णवार्तिकीम् ॥११॥

उस समय जो जो इच्छा हो सो सब वरदान मांग ले, धन मंगवाने का वर मांग ले या अपने कार्य की सब बात कहलाने का वरदान मांग ले ॥

भोगार्थमथवा ब्रूयान्नृत्यं कर्तुमथापि वा ।
भूतानानयितुं वाऽपि स्त्रियमानयितुं तथा ॥१२॥

भोग भोगने के लिये अथवा नाच देखने के लिये वरदान मांगे अथवा प्राणियों को तथा स्त्रियों को यक्षिणी के द्वारा अपने पास बुलाने का वर मांगे ।

राजानं वा वशीकर्तुमायुर्विद्यायशोबलम् ।
एतद्यदन्यद्यदीप्सेत साधकस्तत्तु याचताम् ॥१३॥

अथवा राजा को वश में करने का वा आयु, विद्या, यश और बल का वर मांग ले, इसके अतिरिक्त साधक की जो इच्छा हो सो वरदान मांगे ।

चेत्प्रसन्ना यक्षिणी स्यात् सर्वं दत्ते न संशयः ।
अशक्तस्तु द्विजैः कुर्यात् प्रयोगं सुरपूजितम् ॥१४॥

यदि यक्षिणी प्रसन्न हो जावे तो निश्चय साधक की इच्छा को पूर्ण करने वाले सब प्रकार के वर को देती है । यदि इस प्रयोग को करने में स्वयं असमर्थ हो तो ब्राह्मणों से इस प्रयोग का साधन करावे ॥१४॥

सहायानथवा गृह्य ब्राह्मणान् साधयेद्व्रतम् ।
नित्यं कुमारिका भोज्याः परमान्नेन वै त्रयः ॥१५॥

अथवा ब्राह्मणों की सहायता लेकर इस प्रयोग का साधन करे, और इस प्रयोग में तीन कुमारी कन्याओं का प्रतिदिन भोजन दिया करे ॥१५॥

सिद्धे धनादिकेनैव सदा सत्कर्म चाचरेत ।
कुकर्मणि व्ययश्चेत्स्यात्सिद्धिर्गच्छति नान्यथा ॥१६॥

यक्षिणी के सिद्ध होने पर जो धन आदि प्राप्त हो उसे शुभ कर्मों में खर्च करे । निन्दित कर्मों में यक्षिणी के दिए धन को खर्च करने से सिद्धि नष्ट हो जाती है ॥१६॥

गुप्तेन विधिना कार्यं प्रकाशं नैव कारयेत् ।
प्रकाशे बहवो विघ्ना जायन्ते नात्र संशयः ॥१७॥

इस प्रयोग को गुप्त रूप से करे, कदापि इसे प्रकाश न करे। प्रकाश करने में निःसन्देह बहुत से विघ्न होते हैं ॥१७॥

प्रयोगश्चानुभूतोऽयं तस्मात्यत्नवदाचरेत् ।
निर्विघ्नेन विधानेन भवेत् सिद्धिरनुत्तमा ॥१८॥

यह अनुभव किया हुआ सिद्ध प्रयोग है, इसको यत्नपूर्वक करना चाहिये, इस प्रयोग को निर्विघ्न समाप्त करने से अच्छी सिद्धि होती है।१८।

गोप्यं चेदं महत्तन्त्रं यस्मै कस्मै न दापयेत् ।
दुर्जनस्पर्शनाद्विद्या भवत्यल्पफला यतः ॥१९॥

इस महातन्त्र को गुप्त रखे, नास्तिक, पाखण्डी, शठ और—कृपण इन से कभी न प्रकाश करे क्योंकि दुर्जन के संसर्ग से सिद्ध प्रयोग का फल नष्ट हो जाता है ॥१९॥

दशमाङ्कः ।

ईश्वर उवाच—

अथ ते कथयिष्यामि रसायनविधिं परम् ।
कुबेरतुल्यो भवति यस्य सिद्धौ नरो भुवि ॥१॥

श्री शिवजी बोले हे योगिराज ! अब मैं तुझसे रसायन विधि कहता हूँ। सावधान होकर सुनो, जिस के करने से पृथ्वी पर मनुष्य कुबेर के समान हो जाता है ॥१॥

गोमूत्रं हरितालं च गन्धकं च मनःशिलाम् ।
समं समं गृहीत्वा तु यावच्छुष्कं तु पेषयेत् ॥२॥

हरताल, गन्धक, मैनसिल इनको बराबर लेकर जब तक ये सूख न जावें तब तक गोमूत्र में खरल करे ॥२॥

गोमूत्रं रक्तवर्णाया गन्धकं रक्तवर्णकम् ।
एकादशदिनं यावद्रक्ष्यं यत्नेन वै शुचि ॥३॥

लाल गाय का मूत्र और लाल गन्धक इन्हें पवित्र होकर ग्यारह दिन पर्यन्त यत्न पूर्वक रखे ॥३॥

गोलं कृत्वा द्वादशेऽह्नि रक्तवस्त्रेण वेष्टयेत् ।
चतुरङ्गुलमानेन मृदं लिप्त्वा विशोषयेत् ॥४॥

बारहवें दिन इसका गोला बनाकर उसपर लाल कपड़ा लपेटे और चार अंगुल मोटी मिट्टी उसपर लगा कर उस गोला को घाम में सुखा ले।४।

पञ्चहस्तप्रमाणेन भूमौ गर्तं तु कारयेत् ।
पलाशकाष्ठलोष्ठैस्तु पूरयेद्द्रव्यमध्यगम् ॥५॥

फिर भूमि में पांच हाथ का गड्ढा खोद कर उसके बीच में गोला रख देवे । उसके चारो ओर से पलास का कोयला गड्ढे में भर देवे ॥५॥

अग्निं दद्यात् प्रयत्नेन स्वाङ्गशीतं समुद्धरेत् ।
ताम्रपत्रेषु सन्तप्ते तद्भस्म तु प्रदापयेत् ॥६॥

उस कोयले में यत्न पूर्वक अग्नि लगा देवे, जब अग्नि जल कर अपने से ठण्ढी हो जावे तो उसमें से गोले को बाहर निकाल लेवे और तांबे के पत्र को भी आग में तपाकर उसपर गोलेकी राख को डाल देवे ॥

गुञ्जैकं तत्क्षणात् स्वर्णं जायते ताम्रपत्रकम् ।
अरण्ये निर्जने देशे शिवालयसमीपतः ॥ ७ ॥

तो एक घुंघुची के बराबर वह तांबे का पत्र उसी समय सुवर्ण का हो जावेगा । फिर बन में, एकान्त स्थान में, शिवजी के मन्दिर के समीप में ।

शुक्लपक्षे सुचन्द्रेऽह्नि प्रयोगं साधयेत् सुधीः ।
त्र्यम्बकेति च मन्त्रस्य जपं दशसहस्रकम् ॥ ८ ॥

शुक्लपक्ष में जिस दिन चन्द्रमा बलवान् हो उस दिन यह प्रयोग करे और "त्र्यम्बकं यजामहे" इस मन्त्र का प्रतिदिन दस हजार जप करे ।८।

प्रत्यहं कारयेद्विप्रान् भोजयेद्रुद्रसम्मितान् ।
यावत् सिद्धिर्न जायेत तावदेतत्समाचरेत् ॥९॥

इस प्रकार प्रतिदिन करे और ग्यारह ब्राह्मणों को नित्य भोजन करावे, जब तक सिद्धि न हो तब तक ऐसा ही करे ॥९॥

द्रव्यमर्दनमन्त्रः—ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वर्णादीनामीशाय रसायनस्य सिद्धिं कुरु कुरु फट् स्वाहा । प्रत्यहं मर्दने अयुतं जपेत् ।

इन क्रियाओं को करते समय प्रतिदिन इस उपरोक्त मन्त्र का दस हजार जप करे ।

इत्येवं शम्भुना प्रोक्ता मन्त्राः प्रत्यक्षसिद्धिदाः ।
स्वप्ने शिवाख्यगिरये अनुभूतास्तु तेन वै ॥१०॥

यह प्रत्यक्षसिद्धि देनेवाले मन्त्र को ध्यान में शिवजी ने अपने भक्त शिवगिरि से कहा है और शिवगिरि ने इन मन्त्रों की परीक्षा करके प्रकाश किया है ॥१०॥

शिवाज्ञया मुनेर्बद्धाः शुभैः पद्यैर्यथामतिः ।
अनेन विधिना मर्त्या ये करिष्यन्त्यसंशयाः ॥११॥

शिवजी की आज्ञा से महर्षि शिवगिरि ने यथा शास्त्र और यथा मति के अनुसार उन प्रयोगों को श्लोकबद्ध किया जो कि शिवजी ने उपदेश दिया था । जो मनुष्य श्रद्धा पूर्वक उक्त प्रकार से उन प्रयोगों को करेंगे ।

सिद्धिं ह्यलौकिकीं लब्ध्वा भविष्यन्ति सुपूजिताः ।
सन्देहोऽत्र न कर्तव्यः साक्षाच्छङ्करभाषिते ॥१२॥

उन्हें अलौकिक सिद्धि प्राप्त होगी और वह साधक संसार में पूज्य होगा । शिवजी के कहे प्रयोग में सन्देह नहीं करना चाहिये ॥१२॥

इति श्रीमहेश्वरप्रोक्तं माहेश्वरीयतन्त्रं समाप्तम् ।

—:※:—

❀ अस्मत्प्रकाशितस्तोत्राणि ❀

दुर्गासप्तशती—मूलमात्र सचित्र पत्रात्मक यन्त्रस्थ
दुर्गासप्तशती—यन्त्र =) दुर्गासप्तशती—ताबीजी III)
बगलामुखी पञ्चाङ्ग I—)
अपराजिता स्तोत्र—मूलमात्र =)
ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्र —) गायत्रीरामायण —)
गुह्येश्वरी सहस्रनामस्तोत्र I)
ताराकपूरस्तोत्र—सं० टी०, भा० टी०, पद्यानुवाद I)
दुर्गाशतनाम स्तोत्र —)
देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र-भा०टी० तथा सरस्वतीकवच-भा०टी० =)
" " —पञ्चटीकोपेत I) नारायण शतक =)
प्रश्नोत्तरी—भा० टी० तथा चर्पटपञ्जरी =)
ब्रह्मचिन्तनिका—मोहमुद्गर —)
महाकाल सहस्र नाम स्तोत्र—शिवागमकल्पोक्त =)
मङ्गलागौरीस्तोत्र—भा० टी० =)
महाकाल शनि मृत्युञ्जय स्तोत्र =)
महाकाली शतनामस्तोत्र —)II कालीकवच =)
महामृत्युञ्जय जपविधि वेदोक्त-तन्त्रोक्त =)
महाविद्यास्तोत्र—सप्रयोग =) महालक्ष्म्यष्टक स्तव —)
महिम्नस्तोत्र—मूलमात्र =)
ललितासहस्रनामावली I)
विपरीतप्रत्यङ्गिरास्तोत्र =) शनिस्तोत्र —)II
सूर्यस्तवराजादि—अष्टस्तोत्र =)

पुस्तकप्राप्तिस्थानम्- **मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स**

संस्कृत बुकडिपो, कचौड़ीगली, बनारस-१